दूसरा अध्याय

नई कहानी और हिमांशु जोशी

हर भाषा का साहित्य अपने प्रदेश विशेष के जीवन का दर्पण होता है । दर्पण में पड़ा हुआ प्रतिबिंब जितना सत्य होता है, उतना ही साहित्य में दिखाई देनेवाला जीवन का प्रतिबिंब भी सत्य होता है । यही कारण है कि साहित्य हमेशा जीवन से जुड़ा रहता है । मनुष्य जीवन तो सदा परिवर्तनशील होता है । जीवन के परिवर्तन के कारण ही हर एक देश की स्थितियाँ बदलती रहती हैं । स्थितियों के अनुसार साहित्य भी बदलता रहता है । इसलिए हम कह सकते हैं कि किसी युग विशेष के बारे में सोचना है तो उस युग का साहित्य पढ़ने से हमारे आँखो के सामने उस युग का चित्र उभर आता है ।

आज साहित्य का रूप बड़ा व्यापक हो गया है । आज साहित्य में हम विविध विधाओं के बदलते रूप देख सकते हैं । इन विविध विधाओं में कहानी एक ऐसी विधा है, जो छोटी होते हुए भी प्रभावशाली है, और जो अदिम काल से नदी के पानी की तरह निरन्तर गति से प्रवाहित रही है कि जिसका अंत नहीं ।

मनुष्य - जन्म से ही कहानी का आरंभ हुआ है, परन्तु जैसे हर मनुष्य अपने आप में नया होता है उसी प्रकार ही हर एक कहानी अपने आप में नई होती है । ऊपरी तौर पर मनुष्य एक जैसा हो तो भी युगानुरूप उसमें नयी नयी प्रवृत्तियाँ जन्म लेती है । इसलिए हम इस तथ्य पर पहुँचते हैं कि कहानी का जन्म बहुत पहले हो चुका है, तो भी आज उसमें युग और परिस्थितियों के अनुसार छोटे बच्चों में जो नयापन या आधुनिकता होती है, वही आज की कहानी में भी नयापन हैं ।

हर एक कहानी अपने युग की नई कहानी ही होती है । परन्तु आधुनिक युग के कहानीकारोंने कहानी के पीछे " नई " संज्ञा या विशेषण जोड़कर जो आन्दोलन छेड़ा हैं, वह व्यर्थ लगता है, क्योंकि यह आन्दोलन " नई कविता आन्दोलन " के आधार पर ही निर्माण हुआ था, जिसके कारण विद्वानों में अनेक मतभिन्नता आ गयी थीं । इसका नतीजा यह हुआ कि इस आन्दोलन को चुनौती देने के लिए अनेक आन्दोलन खड़े हुए जो अधिक समय तक नहीं टिक सके । इसलिए हम कह सकते हैं कि स्वतंत्रता के बाद भारतीय जीवन - पध्दति में जो

महत्वपूर्ण परिवर्तन हुआ, उसके अनुसार नवीन जीवनमूल्यों का आधार लेकर हिन्दी कहानी ने जो मोड़ लिया और नये कहानीकारों ने अनेक नये विषयों को लेकर नई शैली में अनेक समस्याओं का जो उद्घाटन किया हैं, वही नई कहानी है, जो स्वाधीनता के बाद नये संदर्भों से जुड़ी हुई है । इसमें अकेलापन, अजनबीपन, अपरिचितता, स्वतंत्र - सत्ता, अस्तित्व का संकट, तनाव, कटुता, कुंठा, निराशा एवं घुटन आदि प्रवृत्तियाँ देखने को मिलती हैं ।

स्वाधीनता के बाद भारत में " नए युग " का आरंभ हुआ । नए युग के अनुसार राजनीति सामाजिक और सांस्कृतिक परिवर्तन हुए " भारत के स्वतंत्र होते ही देश में एक नई स्फूर्ति जाग्रत हुई । इससे भारतीय व्यक्ति की मानसिकता में भी एक महत्वपूर्ण परिवर्तन आया। आजादी के साथ - साथ भारतीय शासन व्यवस्था ने व्यक्ति को मतदान का अधिकार देकर नए समाज की वैचारिक नींव डाली । एक ओर औद्योगिक तथा ग्रामीण विकास की नई योजनाएँ बनने लगीं और दूसरी ओर नागरिक के मानस में अपने व्यक्तिगत तथा सामाजिक अधिकारों के प्रति एक नई चेतना का उदय हुआ । भारतीयों की ऐसी भावना थी कि स्वतंत्रता के मिलते ही सब पीड़ा, शोषण नष्ट होकर यहाँ गांधीजी के अनुसार रामराज्य की स्थापना हो जायेगी । परन्तु स्वाधीनता के पश्चात् भारत का विभाजन, हिन्दु - मुस्लिम झगड़े और आर्थिक संकटोंने देश को घेर लिया ।

आर्थिक प्रगति और ग्रामो में सुधार लाने के लिए पंचवर्षीय योजनाओं का कार्यक्रम बनाया गया । इससे देश की आर्थिक प्रगति तो अवश्य हुई परन्तु देश में भ्रष्टाचार की प्रवृत्ति अधिक बढ़ी । देश बड़े व्यापारी और बड़े अफसरों के चंगुल में फँस गया और नए युग के साथ - साथ नई समस्याएँ उत्पन्न हुई, जिनमें बेरोजगारी, भ्रष्टाचार, शासन व्यवस्था, शोषण आदि समस्याएँ सम्मिलित हैं । इस समय नई पीढ़ी के सामने उच्च जीवनमूल्यों का आदर्श नहीं था । हर व्यक्ति आत्मरक्षा की भावना से प्रेरित था । इन प्रेरक परिस्थितियों के कारण ही नई कहानी का आन्दोलन निर्माण हुआ ।

नई कहानी का स्वरूप :-

प्रत्येक युग अपने अनुरूप भीतरी और बाहरी परिस्थितियों से बदलता है । सन् 1947 ई. के बाद भारत में एक नव - युग का निर्माण हुआ और स्वाधीनता के कारण सभी

क्षेत्रों में एक आमूलाग्र परिवर्तन होकर देश का नक्शा या ढांचा ही बदल गया । जो देशभक्त थे, वे अपना मूल्य चुकाने के लिए अपने स्वार्थ से अंधे होकर देश का अधिकार हाथ में हासिल करने के पीछे पड़े और आम - आदमी का सुखी बनने का सपना चकनाचूर हो गया । इसी कारण देश में निराशा कुंठा, हताशा, संघर्ष, अस्तित्व का संकट आदि प्रवृत्तियाँ दिखाई देने लगी । इसी परिस्थिति का असर नए कहानीकारोंपर पड़ा और उनको नई दृष्टि प्राप्त हुई । इसी समय पाठकों की रुचियों में भी परिवर्तन आया, उन्होंने खोखली, झूठी कहानियाँ पढ़ना पसंद नहीं किया । इसलिए नए कहानीकारों नें युग और पाठकों को दृष्टि में रखकर अपनी नई दृष्टि से जीया हुआ जीवन सत्य ही नए संदर्भो में उद्‌घाटित किया और कहानी के स्वरूप में एक क्रांतिकारी परिवर्तन आया, जो कहानी का विकास मात्र न होकर एक स्वतंत्र उद्‌भावना है । इसतरह स्वतंत्रता के पश्चात् नई जीवन दृष्टिसे उपजी एक नवीन धारा ही " नई कहानी " है ।

पुरानी कहानी और नई कहानी में मूलभूत अंतर है । नई कहानी से जीवन दृष्टि से ही नहीं बल्कि वैचारिक स्तर से भी पृथक है, क्योंकि इसमें परिस्थिति के अनुसार विचार, विषय और शैली में बदलाव आया है । स्वातंत्र्योत्तर पूर्व की हिन्दी कहानियाँ आदर्शो, आकांक्षाओं और सपनों की कहानियाँ हैं । उनमें समाजसुधार और उपदेश करने का भाव स्पष्ट दृष्टिगोचर होता है । नई कहानी आधुनिक स्वरूप को अपनाती हुई मानव - जीवन से विविध पक्षों का वास्तविक और तटस्थ चित्रण करती है । नई कहानी ने समानरूपसे ग्राम - जीवन कस्बाती, नगरीय ओर महानगरीय जीवन को अपनाया है । नई कहानी पुरानी घटनाओं को भी नया संदर्भ देती है । नई कहानी परिवेश बोध, अनुभूति की सजीवता और स्वाभाविक भाषा के कारण पुरानी कहानी से अलग हो गयी है ।

नए कहानीकारों ने भोगे हुए, जीए हुए अन्तर्विरोध और असंगति को यथार्थ से अभिव्यक्त किया है । इसलिए नई कहानी में आदमी का संघर्ष, संत्रास और अंतर्द्वंद्व उपस्थित हुआ है । इसमें मानवीयता का मूलस्वर मुखरित है । नया कहानीकार अनुभूतियों की सहजता से जीवन के हर पक्ष या क्षण को चित्रित करता है । नया कहानीकार जीवन के क्षण, लघु-प्रसंग, मुड - विचार आदि को अपनी कहानी का कथानकमानता है । वह मनुष्य जीवन के यथार्थ को समग्रता से देखता हुआ अभिव्यक्ति के नये - नये प्रयोग करता है, इसपर सुरेश सिन्हा का कथन है - ' नये कहानीकारों ने अपने उत्तरदायित्व को समझकर छोटे - छोटे

जीवन खण्डों को सूक्ष्म दृष्टि से देखकर स्थानिक आचार - विचार, रीति - नीति, भाषा, विशिष्ट शब्दावली को लेकर कलात्मक वैशिष्ट्य उत्पन्न किया है ।"[1]

नई कहानी का आविर्भाव काल और नामकरण :-

नई कहानी का निश्चत आविर्भाव कब हुआ इसके बारे में विद्वानों में मतभिन्नता है । अधिक विद्वानों ने सन् 1950ई.को ही " नई कहानी " का उन्मेष काल माना है । परन्तु सन् 1947 ई. के बाद ही कहानी में नये मोड़ से परिवर्तन आया है । इसलिए हम सन् 1947 ई. के बाद के कहानी साहित्य को स्वातंत्र्योत्तर हिन्दी कहानी की संज्ञा दे सकते हैं । इसके ही समान्तर " नई कहानी " शब्द का उद्‌भव हुआ । इसलिए हम स्वातंत्र्योत्तर काल को " नई कहानी " का उगम काल मान सकते हैं ।

नई कहानी के नामकरण पर अनेक विवाद हुए और अनेक लेखकों ने इस नामकरण का विरोध किया, क्योंकि नया एक ऐसा शब्द है कि जो आज नया है तो कल पुराना पड़ता है । वैसे नया शब्द जीवन शक्ति, जिजीविषा और प्रगति का द्योतक है । नए शब्द का कोशगत अर्थ है, जो जीर्ण नहीं है, जो ताजा, मौलिक, अद्‌भुत और आधुनिक है । प्राय: हर क्षण नया होता है और बितने के बाद पुराना भी होता है ।

वैसे देखा जाय - तो " नई कहानी " नाम की कोई ऐसी सुनिश्चित शुरूआत नहीं थी । परन्तु नई कविता के आधारपर ही " नई कहानीका नामकरण हुआ है । काल की दृष्टि से सन् 1951 ई. से आरंभ होनेवाली कहानी को ही नवीन जीवन दृष्टि के आधार पर " नई कहानी " कहा जाता है । फिर भी सन् 1956ई.में नई कहानी के अस्तित्व का प्रश्न उठाया गया था । लेकिन हरिशंकर परसाई, मोहन राकेश, शिवप्रसाद सिंह ने अपने निबंधों के पहले ही वाक्य में " नई कहानी " नाम का प्रयोग किया है । इसप्रकार " नई कहानी " शब्द को मान्यता मिली । तद्‌नंतर " नई कहानी " के विरोध में कई आंदोलन खड़े हो गये । जिसके कारण कहानी में अनेक नए मोड़ आ गयें, जिन्हें " स्वातंत्र्योत्तर कहानी ", " आज की कहानी ", " सचेतन कहानी ", " समकालीन कहानी ", " अकहानी ", " सहज कहानी " जैसे अनेक नामों से अभिहित किया गया हैं । ये सभी नाम आन्दोलन के कारण लगे हुए हैं, जो

हमें " नई कहानी " के प्रकार ही लगते है, क्योंकि " नई कहानी " के प्रमुख तत्व इसमें मोजूद हैं । इसी कारण हम कह सकते हैं कि स्वातंत्र्योत्तर कहानी को " नई कहानी " नाम ही अधिक युक्तिसंगत लगता है ।

नई कहानी की परिभाषाएँ :-

सच तो यह है कि " नई कहानी " को परिभाषा के अंतर्गत नहीं रखा जा सकता । फिर भी अनेक लेखकों ने अपनी ओर से " नई कहानी " को परिभाषा में बांधने की चेष्टा की है ।

कमलेश्वर के अनुसार " नई कहानी " की परिभाषा इसप्रकार है - " नई कहानी मात्र जीवन खण्डों या घनीभूत क्षणों का सम्प्रेषण न होकर, उनमें निहित अर्थो या मूल्यों की कहानी है, जो अनेक स्तरों पर घटित होती है, वह एक नई शुरूवात की पीठिका हैं । यह प्रक्रिया ही - नई कहानी की वास्तविक रचना - प्रक्रिया है । नये यथार्थ को खोजनेवाली कहानी नई है ।"[2]

डॉ. सुरेश सिन्हा के मत में - " नई कहानी वह है, जो पूर्णतया यथार्थवादी सामाजिक दृष्टि की मर्यादा एवं सार्थक सामाजिक मूल्यों की सीमा में अनुभूति के किसी आवेग को स्वाभाविक अभिव्यक्ति की गरिमा प्राप्त करना ही, नई कहानी है । नई कहानी जीवन के यथार्थ का प्रस्तुतीकरण है ।"[3]

" नई कहानी " के बारे में गुलाबराय का कथन है - " बाहरी परिवेश के दबाव में बनते बिगड़ते व्यक्ति के जीवन और मन के विभिन्न सम्बधों, मूल्यों और संवेदनाओं की अभिव्यक्ति है, यह अभिव्यक्ति अनुभूति प्रधान है । सामाजिक परिवेश में रहते हुए व्यक्ति व्दारा अनुभूत या पहचाने गये जीवन - सत्य की अभिव्यवित ही " नई कहानी " है ।"[4]

डॉ. सुमनजी की नई कहानी की परिभाषा है -." वास्तव में पुरानी पीढ़ी की मान्यताओं के स्थान पर नई मान्यताओं की प्रतिष्ठापना समाज में परिव्याप्त समसामायिक संत्रास कुंठा, पीड़ा आदि " भोगे हुए यथार्थ " की सशक्त अभिव्यक्ति ही नई कहानी है ।"[5]

नई परिस्थितियों, नये सम्बन्ध, नई समस्याएँ, नये संघर्ष, नये ढंग का भावबोध ही आज के युग का यथार्थ है । इसीकारण ही नया कहानीकार अपनी नई दृष्टि से पुराने मूल्यों को कसकर उसके खोखलेपन को उजागर करता है । इसलिए हम कह सकते है कि पुराने और नये जीवन मूल्यों की टकराहट और यथार्थ चित्रण ही " नई कहानी " है ।

हमारी दृष्टि में " नई कहानी " वह है, जो स्वाधीनता के बाद नई जीवन दृष्टि से नए संदर्भों को लेकर नई भाषा शैली में लिखी हुई कहानी है ।

इसतरह अनेक विद्वानों ने नई कहानी की परिभाषा प्रस्तुत की है । इस परिभाषा में नई कहानी की अनेक विशेषताएँ प्रकटित हुई है, जिससे नई कहानी का नयापन उजागर हुआ है ।

नई कहानी के नएपन को व्यक्त करनेवाली विशेषताएँ :-

1) **यथार्थ बोध :-**

वास्तविक चित्रण नई कहानी का आत्मा है । नई कहानी में खोखले जीवन को स्थान नहीं है । जीवन सत्य का उद्घाटन करना ही नई कहानी का उद्देश्य है । इसलिए नई कहानी में जीवन के वास्तविक चित्रण को अधिक महत्व दिया गया है । नई कहानी का चित्रित सत्य बाह्य की अपेक्षा आन्तरिक ही अधिक है । नई कहानी का सत्य भोगा हुआ, देखा हुआ और सुना हुआ है । इसमें हर एक लेखक का अनुभव और दृष्टि अलग - अलग होने के कारण कथावस्तु में भिन्नता आ गई हे । इसलिए यथार्थ शब्द के अर्थ को व्यापकत्व प्राप्त हुआ है ।

आज का कहानीकार परंपरा से हटकर भोगे हुए यथार्थ का चित्रण नए - नए संदर्भों की खोज में करता है । इसमें हर एक लेखक का यथार्थ की ओर देखने का चष्मा अलग होता है । आज का कहानीकार अपनी यथार्थ दृष्टि से नए और पुराने संदर्भों में नए जीवन मूल्यों की खोज करता है ।

BARR. BALASAHEB KHARDEKAR LIBRARY
SHIVAJI UNIVERSITY, KOLHAPUR
SHIVAJI UNIVERSITY KOLHAPUR LIBRARY

नई कहानी में सत्य की अभिव्यक्ति और व्यक्ति एवं समाज की समस्याओं का उद्‍घाटन हुआ है । यथार्थ के धरातल पर लिखी नई कहानी के बारे में डॉ. सुरेश सिन्हा का कथन है - " नई कहानी जीवन के यथार्थ की प्रतिच्छाया है, वह मानवजीवन के संघर्ष के किसी संवेदना जन्य पक्ष का प्रतिनिधित्व करती है । "[6]

इसलिए हम कह सकते हैं कि स्वतंत्रता के पश्चात् का भारतीय जन - जीवन का यथार्थ रूप ही नई कहानी में प्रतिबिंबित हुआ है ।

2) अनुभूति की प्रामाणिकता :-

जीवन सत्य को उद्‍घाटित करते समय अनुभूति का होना आवश्यक है । विशेष रूप में नई कहानी जीवनानुभव है, क्योंकि नई कहानी का सीधा सम्बंध व्यक्ति के जीवन और परिवेश से अधिक रहा है । प्रायः अनुभूति की गहराई में ही सत्य और संवेदना के समीप पहुँचने की शक्ति होती है । नई कहानीकारों में यही शक्ति है जिससे उन्होंने अपनी कहानियों के व्दारा अपने व्यक्तिगत और समयगत अनुभवों से सत्य तक पहुँचने का प्रामाणिक प्रयत्न किया है । इसतरह नई कहानी में जीवन को उसके समग्रता में देखा है और अनुभूति की प्रामाणिकता से अभिव्यक्त भी किया है । नई कहानी में अजनबीपन, अकेलापन और संबन्धों का टूटना आदि तत्व अनुभव की प्रामाणिकता से अभिव्यक्त हुए हैं ।

3) मध्यमवर्गीय पीड़ा का चित्रण :-

नए कहानीकार मूल में मध्यमवर्गीय हैं, इसलिए इनकी संवेदना मध्यमवर्गीय समाज से अधिक जूड़ी है । यही कारण है कि मध्यमवर्गीय लेखक मध्यवर्गीय समाज के या व्यक्ति के प्रति ही लिखते हैं । इनको उनकी पीड़ा अपनी लगती है । इसतरह नए कहानीकारों का सीधा संबंध मध्यमवर्गीयों से अधिक है । इसलिए वे उनकी विवशता, हताशा और महत्वकांक्षाओं का चित्रण सजीवता से अपनी कहानियों में करते हैं । विशेषतः मध्यम - वर्गीय जीवन मूल्यों का चित्र ही नई कहानी में दिखाई देता है ।

4) **अन्तर्द्वंद्व :**

नई कहानी में अन्तर्द्वंद्व से पीड़ित व्यक्ति का चित्रण ही हुआ है । इसमें तनावग्रस्त वातावरण में रहे व्यक्ति की अन्तर्वेदना स्वाभाविक शैली में सजीवता से व्यक्त हुई है । नई कहानी का आदमी अपने आपसे संघर्ष करनेवाला है, जिसमें घुटन, कुंठा, अतृप्ति, अकेलापन, अजनबीपन, अपरिचितता आदि प्रवृत्तियाँ मिलती हैं ।

नई कहानी में जीवनगत अंतर्संघर्ष का चित्रण है । इसमें अंतर्द्वंद्व के कारण मूल्य विघटन का मार्मिक चित्रण भी हुआ है ।

5) **आधुनिक बोध :-**

नवीनता के कारण नई कहानी में आधुनिक बोध की अभिव्यक्ति हुई है । नई कहानी में बौध्दिकता, मानसिक कुंठाएँ, मानवतावाद में आस्था, परंपरागत मूल्यों के प्रति अनास्था नई भाषा के प्रयोग आदि आधुनिक तत्व मिलते हैं । नई कहानी में आधुनिक बोध के व्यक्तिवादी पक्ष और प्रगतिशील पक्ष दोनों का प्रयोग दिखाई देता है । नई कहानी में व्यक्तिवाद को अधिक महत्व दिया गया है, जिसमें अकेलापन, अजनबीपन, संत्रास, मृत्यूबोध आदि का रुप उभरा है । विशेषत: नए कहानीकारों ने अनुभव के आधार पर ही आधुनिकता और युगचेतना को स्पष्ट किया है ।

6) **नई कहानी में मानव - मूल्यों की खोज :-**

स्वाधीनता के साथ ही परिवर्तन का युग आया, जिसमें परंपरागत मूल्यों का अस्वीकार और नवीन - मानव मूल्यों को स्वीकारने की माँग थी । यही कारण है कि नई कहानी में शाश्वत मूल्या का अस्वीकार और परंपरागत रूढियों पर प्रहार किया गया है । नया कहानीकार कृत्रिम मूल्यों से मुक्त होकर नवीन दृष्टि से मानवीय मूल्यों की ओर देखता है ।

7) **नैतिक मूल्यों में बदलाव :-**

नई कहानी जीवन के अधिक निकट आयी है, जिसके कारण परंपरागत मूल्यों के

खंडन के साथ - साथ ही नैतिक मूल्यों में भी बदलाव आ गया है । नई कहानी में दाम्पत्य, विवाह, परिवार, संस्था आदि की बदलती परिस्थितियाँ चित्रित हुई हैं । विशेषतः भारतीय नारी में जो मर्यादा और आदर्श का नैतिक मूल्य था, वह बदल गया है ।

8) **आँचलिकता का स्वर :-**

आँचलिकता नई कहानी की एक नई धारा है, जो अपना विशिष्ट ऐसा महत्व रखती है । इसलिए नई कहानी के इस नए दौर में आँचलिकता हिन्दी कहानी साहित्य को एक देन के रूप में उपलब्ध हुई है । आँचलिक कहानियों में जनपद का जीवन, उनकी भाषा, वेशभूषा, रहन - सहन, आचार - विचार, संस्कृति, रुढ़ियाँ, अंधविश्वास, उत्सव और यांत्रिकता से बिगड़ी हुई मानसिक स्थितियों का प्रतिबिंबन हुआ है । आँचलिक कहानीकारों ने अंचल का उनकी ही भाषाशैली में समग्रता से चित्रण किया है ।

9) **नारी विषयक दृष्टिकोण :-**

नई कहानी में नारी की ओर देखने की दृष्टि बदल गई है । इसमें नारी का अकेलापन और मानसिक द्वंद्व चित्रित है । प्रेम में अकेलापन झेलनेवाली नारी अपने अस्तित्व का बोध देती है । यही कारण है कि नए कहानीकारों ने भारतीय नारी को उसके सुंदर रूप में प्रस्तुत न करके उसके अकेलेपन के दुःख को चित्रित किया है । नई कहानी में स्त्री का स्वतंत्र व्यक्तित्व और स्वावलंबिनी रुप दृष्टिगोचर होता है । अब वह प्रेम में रमी भावुक नारी नहीं, बल्कि अपने अस्तित्व का बोध दिलानेवाली संघर्षशील नारी है ।

10) **युग - जीवन का प्रतिबिंब :-**

नई कहानी आपने युग का प्रतिनिधित्व करनेवाली कहानी हैं, जिसमें स्वाधीनता के पश्चात् देश के राजनीतिक, सामाजिक, आर्थिक और धार्मिक बिखराव, टूटन आदि का चित्र उभरकर आया है । नई कहानी में युग जीवन का ऐसा चित्रांकन हुआ है, जिसमें वैज्ञानिक दृष्टि धर्म निरपेक्षता, बौध्दिकता, यांत्रिकता, अन्तर्राष्ट्रीयता, विघटन - विद्रोह, व्यक्तिवादिता,

टूटते परिवार, कुंठा, आस्था - अनास्था नये नैतिक मूल्य आदि सम्मिलित हैं ।

शिल्पपक्ष की दृष्टिसे नई कहानी की विशेषताएँ :-

नई कहानी अपने नए शिल्प को लेकर ही प्रस्तुत हुई है । इसमें पुरानी कहानी के तत्व लुप्त होकर नई कहानी के अपने अलग और नवीन तत्व निर्माण हुए हैं । यही कारण है कि पुरानी कहानी की अपेक्षा नई कहानी में शिल्प नवीन है, जिसके कारण दोनों पृथक हुई हैं ।

1) **सांकेतिकता :-**

नई कहानी संकेत से शुरू होती है और संकेत में ही समाप्त भी होती है । नई कहानी का सारा सगुंफन ही सांकेतिक है । इसपर डॉ. नामवर सिंह का कथन है - " नई कहानी का समूचा रूप - गठन और शब्द गठन ही सांकेतिक है जैसे देह में रक्त अथवा प्राण । "[7] सांकेतिकता के कारण ही नई कहानी की भाषा में सूक्ष्मता एवं प्रभावशीलता अयी हैं । नए कहानीकार बड़ी सहजता से संकेत करते हैं । इसलिए सांकेतिकता नई कहानी की महत्वपूर्ण उपलब्धि है ।

2) **कथानक का ह्रास :-**

कथानक का ह्रास नई कहानी की एक प्रमुख विशेषता है, जिसमें घटना की अपेक्षा जीवन के किसी एक क्षण को अधिक महत्व दिया गया है । नए कहानीकारोंने अपनी कहानी में जीवन के हर क्षण को चित्रित करने का प्रयास किया है, जिसके कारण सगुंफन में अधिक बिखराव आ गया है । कथानक के ह्रास के बारे में डॉ. नामवरसिंह कहते हैं " ह्रास कथानक का नहीं, बल्कि कथा का हुआ है और जीवन का एक लघु प्रसंग, प्रसंग - खंड, मूड, विचार अथवा विशिष्ट व्यक्तिचरित्र ही कथानक बन गया है । "[8]

नया कहानीकार घटना को महत्व न देकर मूड, विचार क्षण को महत्व देता है ।

3) **प्रतीकात्मकता :-**

नई कहानी स्थूल से सूक्ष्म की ओर जानेवाली प्रवाहित धारा है, जिसे अपना उद्देश्य सफल या स्पष्ट करने के लिए प्रतीकों का आधार लेना पड़ा है । नया कहानीकार प्रतीकों के माध्यम से कहानी का आन्तरिक अर्थ खोल देता है । नई कहानी में नवीन प्रतीकों के साथ - साथ पुराने प्रतीकों को नये संदर्भों में रखा गया है । इसमें प्रतीकों का सार्थक प्रयोग कर विषय वस्तु को समझाने की कोशिश की गयी है । परन्तु कहीं कहीं जटिल प्रतीकों के कारण कहानी के समझनें में कठिनता भी आ गई है ।

4) **बिम्ब विधान :-**

प्रतीकों की तरह नई कहानी में विविध स्तरीय बिंबो का सार्थक प्रयोग हुआ है । नये कहानीकार वातावरण के लिए बिंब विधान का सहारा लेते हैं । बिंब योजना आधुनिक युग की कलात्मक अभिव्यक्ति है, जिसका निर्वाह नई कहानी में ठीक तरह से हुआ है ।

5) **फैंटेसी :-**

नई कहानी में अंतर्द्वंद्व और असलीयत को अभिव्यक्त करने के लिए कहानीकारों ने कल्पना का माध्यम के रूप में इस्तेमाल किया है । इसलिए नई कहानी का कल्पना शिल्प संवेदना से अधिक जुड़ा है । नई कहानी में फैंटसी का दो प्रकार से प्रयोग किया गया है । एक कथा की समग्रता में और दूसरा कथा के किसी विशेष अंश में । नई कहानी में फैंटसी मनोरंजन के साधन में प्रस्तुत न होकर एक विशेष कथा शिल्प में प्रस्तुत है ।

6) **व्यंग का स्वर :-**

नई कहानी में विसंगतियों को प्रकट करने के लिए व्यंग्य का उपयोग किया गया है । विशेषतः नई कहानी में राजनीतिक व्यंग्य का सार्थक प्रयोग हुआ है । नए कहानीकार व्यंग्यात्म से परिस्थितियों पर कड़ा प्रहार करते हैं । नए कहानीकार व्यंग्य का उपयोग कर

समकालीन समस्या की ओर पाठकों का ध्यान आकर्षित करने में सफल हुए हैं । नए कहानीकारों ने अपने आक्रोश को, व्यक्त करने के लिए व्यंग्य का सहारा लिया है । नई कहानी में एक साथ व्यंग्य और विडंबना का उपयोग हुआ है । इसी प्रकार व्यंग्य सघनता और निर्ममता दोनों में व्यक्त हुआ है ।

7) **भाषा :-**

नई कहानी की अपनी भाषा है । नए कहानीकारोंने संदर्भ और कथ्य के अनुरूप भाषा का प्रयोग किया है । नई कहानी की भाषा सौंदर्य संपन्न या कृत्रिम नहीं है । वह अनुभूति को अभिव्यक्त करनेवाली सरल और स्वाभाविक भाषा है । नई कहानी में प्रतीक, बिम्बों, संकेतो का प्रयोग संवेदनाशील भाषा में हुआ है ।

नई कहानी की भाषा छोटे - छोटे वाक्यों और प्रचलित उर्दू - अँग्रेजी शब्दों से युक्त, मुहावरों और कहावतों आदि से पूर्ण है । नये कहानीकारों ने अपने विषय, भाव और प्रदेश के अनुरूप सजीव भाषा का निर्माण किया है, जिसमें आँचलिक, ग्रामीण, अँग्रेजी, उर्दू आदि प्रचलित शब्दों और शैलियों का सफल प्रयोग हुआ है । यही कारण है कि नई कहानी की भाषा नवीन और समृध्द भी बन गई है ।

इसप्रकार विषय और शिल्प की दृष्टि से नई कहानी की अनेक विशेषताएँ हैं, जिसमें अनेक प्रवृत्तियाँ विकसित हुई और विभिन्न कहानीकारों के भिन्न मतों का प्रभाव ही उसपर पडा है । इसीकारण किसी रचना को एक ही कोण से देखना ठीक नहीं है । वैसे तो नई कहानी को एक सामान्य मापदण्ड में बाँधना उचित नहीं होगा । इसलिए हम नई कहानी को किसी सामान्य मापदण्ड में न बाँधकर उनके विशेष सूत्रों को आधार मानकर जोशीजी की कहानियों का मूल्यांकन करने जा रहें हैं ।

नई कहानी और हिमांशु जोशी :-

हिमांशु जोशी नई कहानी आंदोलन के कहानीकारों के अंतर्गत आते हैं । क्योंकि नई कहानी की कतिपय विशेषताएँ जोशीजी की कहानियों में दिखाई देती हैं, जो निम्न प्रकार हैं ।

1) जोशीजी की कहानियों में लेखक के निजी अनुभव और सामाजिक संदर्भों की समान्तर यात्रा प्रस्तुत है ।

2) महानगरीय निम्न मध्यमवर्गीय पीड़ा का चित्रण उनकी कहानियों में हुआ है ।

3) व्यापक सामाजिक संदर्भों में भोगा हुआ यथार्थ हिमांशु जोशीजी की कहानियों में चित्रित हुआ है ।

इन बातों का विस्तार से विवेचन अगले अध्यायों में किया जा रहा है ।

****

SHIVAJI UNIVERSITY LIBRARY KOLHAPUR

संदर्भ

1)	डॉ. सुरेश सिन्हा	: नई कहानी की मूल संवेदना	पृष्ठ 14
2)	कमलेश्वर	: नई कहानी की भूमिका - शुरू की बात	
3)	डॉ. सुरेश सिन्हा	: नई कहानी की मूल संवेदना	पृष्ठ 29
4)	गुलाबराय	: नई कहानी का सुबोध इतिहास	पृष्ठ 28।
5)	डॉ. सुमन कुमार (सुमन)	: कहानी और कहानीकार	पृष्ठ 67
6)	डॉ. सुरेश सिन्हा	: नई कहानी की मूल संवेदना	पृष्ठ 28
7)	डॉ. नामवर सिंह	: कहानी:नई कहानी	पृष्ठ 36
8)	डॉ. नामवर सिंह	: कहानी:नई कहानी	पृष्ठ 14

****